सर्वजन कल्याणकारी महिला शासिका
महारानी अहिल्याबाई होलकर

ईश्वर ने मुझ पर जो उत्तरदायित्व रखा है,उसे मुझे निभाना है.
मेरा काम प्रजा को सुखी रखना है.
मैं अपने प्रत्येक काम के लिये जिम्मेदार हूँ.
सामर्थ्य और सत्ता के बल पर मैं यहाँ- जो कुछ भी कर रही हूँ.
उसका ईश्वर के यहाँ मुझे जवाब देना होगा.
मेरा यहाँ कुछ भी नहीं हैं, जिसका है उसी के पास भेजती हूँ.
जो कुछ लेती हूँ, वह मेरे उपर कर्जा है,
न जाने कैसे चुका पाऊँगी.– अहिल्याबाई होलकर

महान क्रन्तिकारी महिला शासिका महारानी अहिल्याबाई होलकर भारत के मालवा साम्राज्य की मराठा होलकर महारानी थी । अहिल्याबाई का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर के चौण्डी (छौंड़ी) ग्राम में और देहांत 13 अगस्त 1795 कोहुआ। उनके पिता मंकोजी राव शिंदे, अपने गाँव के पाटिल थे । महारानी अहिल्याबाई इन्दौर राज्य के संस्थापक इतिहास-प्रसिद्ध महाराज मल्हारराव होलकर के पुत्र खंडेराव की पत्नी थीं। वह एक बहादुर योद्धा और कुशल तीरंदाज थीं। उन्होंने कई युद्धों में अपनी सेना का नेतृत्व किया और हाथी पर सवार होकर वीरता के साथ लड़ाइयाँ लड़ी।

ऐतिहासिक विवरणानुसार मल्हार राव के निधन के बाद रानी अहिल्याबाई ने राज्य का शासन-भार सम्भाल लिया था और 1795 ई. में अपनी मृत्यु पर्यन्त बड़ी कुशलता से राज्य का शासन चलाया। उनकी गणना आदर्श शासकों में की जाती है। वे अपनी उदारता और प्रजावत्सलता के लिए प्रसिद्ध हैं। श्वसुर, पति, पुत्र की मृत्यु होने पर भी मनोधैर्य न खोते हुए अहिल्याबाई ने राज्य का सफल संचालन किया। प्रजा को कष्ट देने वालों को पकड़कर दंड देने के स्थान उन्हें समझाने की कोशिशें कीं तथा उन्हें जीवन- यापन के लिए भूमि देकर सुधार के रास्ते पर लाया गया, जिसके फलस्वरूप उनके जीवन सुखी व समृद्ध हुए। प्रजा से न्यूनतम कर वसूला गया। कर से प्राप्त धन का उपयोग केवल प्रजाहित के कार्यों में ही किया गया।

अहिल्याबाई का मानना था कि धन, प्रजा व ईश्वर की दी हुई वह धरोहर स्वरूप निधि है, जिसकी मैं मालिक नहीं बल्कि उसके प्रजाहित में उपयोग की जिम्मेदार संरक्षक हूँ । उत्तराधिकारी न होने की स्थिति में अहिल्याबाई ने प्रजा को दत्तक लेने का व स्वाभिमान पूर्वक जीने का अधिकार दिया। प्रजा के सुख- दुःख की जानकारी वे स्वयं प्रत्यक्ष रूप प्रजा से मिलकर लेतीं तथा न्याय-पूर्वक निर्णय देती थीं। उनके राज्य में जाति भेद को कोई मान्यता नहीं होने तथा सारी प्रजा समान रूप से आदर की हकदार होने के कारण अनेक बार लोग निजामशाही व पेशवाशाही शासन छोड़कर इनके राज्य में आकर बसने की इच्छा स्वयं इनसे व्यक्त किया करते थे । अहिल्याबाई के राज्य में प्रजा पूरी तरह सुखी व संतुष्ट थी क्योंकि उनका विचार में प्रजा का संतोष ही राज्य

का मुख्य कार्य होता है। लोकमाता अहिल्या का मानना था कि प्रजा का पालन संतान की तरह करना ही राजधर्म है ।

समस्त प्रजाजनों को न्याय दिलाने के लिए उन्होंने गांवों में पंचायती व्यवस्था, कोतवालों की नियुक्ति, पुलिस की व्यवस्था, न्यायालयों की स्थापना था राजा को प्रत्यक्ष मिलकर न्याय दिए जाने व्यवस्था थी एवं उसी प्रकार कृषि व वाणिज्य की अभिवृद्धि पर ध्यान देते हुए कृषकों को शीघ्र न्याय देने की व्यवस्था की थी । प्रजा की सुविधा के लिए रास्ते, पुल, घाट, धर्मशालाएं, बावड़ी, तालाब बनाये गए थे।

विश्व प्रसिद्ध महेशवेरी साड़ी के व्यापार को शुरू करने का श्रेय भी अहिल्या बाई को जाता है अहिल्या बाई ने कुछ बुनकरों को महेश्वर में यह उद्योग आरंभ करने का निर्देश दिया था जो की आज माहेश्वरी साड़ी के रूप में एक व्यापक व्यापार का रूप ले चुका है । किन्तु अहिल्याबाई होल्कर का सबसे बड़ा योगदान हिन्दू मंदिरों तथा धार्मिक स्थानो पर किए गए निर्माण कार्य , संरक्षण और उनके उद्धार हैं।